प्रेस विज्ञप्ति

समाज को सही दिशा देने के लिए मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता जरूरी – वैदिक

पत्रकारिता विक्रमादित्य की आसंदी पर बैठने के समान है। निर्भीक होकर सत्यता को रखना बडे साहस का काम है।और इसके लिए पत्रकार को किसी भी प्रको त्याग के लिए स्वयं को तैयार रखना पडता है। सच्चाई के लिए किसी भी दबाव और प्रभाव में न आने वाला पत्रकार ही सम्मान के पात्र है। लुभावने पुरस्कारों व सम्मानों के प्रति पत्रकारों को बहुत सजग और सतर्क रहने, निष्पक्ष व तटस्थ रूप से कार्य करने की आवश्यकता है। पत्रकार लोकरक्षक हैं जो सदा निर्भय होकर कार्य करें। उनका चरित्र व मूल्यनिष्ठ जीवन ही उनकी ताकत है। उक्त विचार विख्यात पत्रकार डा. वेदप्रताप वैदिक नें प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा ***मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में मीडिया का योगदान*** विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए नई दिल्ली से पधारे प्रसार भारती के कार्मिक सदस्य श्री व्ही. शिवकुमार नें कहा कि मीडिया को यह तय करना होगा कि पाठक की अभिरूचि को प्राथमिकता दें या शाश्वत मानव मूल्यों को। किसी भी समाचार का अच्छा या बुंरा प्रभाव जनमानस पर उसके अंदर छिपी हुई हमारी मनोवृत्ति और नियत के अनुसार पडता है। उन्होने बताया कि सिर्फ मीडिया जगत में ही नहीं समाज और अन्य संगठनों मे भी हमारी वृत्ति उस संगठन को बिगाडने या बनाने के जिए जिम्मेवार होती है। उन्होने कहा कि ब्रहाकुमारी सस्थान के मूल्यनिष्ठ प्रशिक्षण से हमारे संस्थान के वातावरण और कार्यकर्ताओं के परस्पर समन्वय में बहुत वडा योगदान मिला है जिसके लिए मैं आभारी हू। निश्चय ही यहां की शिक्षा सें पत्रकारिता की फिजा बदल सकती है।

इंदौर से पधारे मीडिया प्रभाग ब्रह्माकुमारीज के अध्यक्ष राजयोगी बी. के. ओमप्रकाश नें कहा कि चूंकि आज मीडिया एक बहुत बडी शक्ति है और जन मन पर उसका बहुत गहरा प्रभाव है, अतः आज वह सामाजिक संस्कृति को प्रभावित करने में सक्षम है। हर ब्यक्ति अच्छा जीवन चाहता है और मानव मूल्यों द्वारा ही अच्छा जीवन बनता है। अतः मानव मूल्यों के प्रचार प्रसार द्वारा मीडिया एक अच्छा समाज निर्मित करने में अपना योगदान दे सकता है। आवश्यकता है स्वयं के सत्य अस्तित्व को समझनें की और सकारात्मक चिंतन द्वारा अपनी वृत्तियों को परिवर्तन करने की। राजयोग इसका एक कारगर माध्यम है।

श्री मनोज श्रीवास्तव, भा. प्र. से., जनसंपर्क आयुक्त (म. प्र.) ने कहा कि यदि मीडिया मात्र ब्यवसायिक दृष्टिकोण को ही महत्व देता है तो वह बहुधा मानवीय मूल्यों को दरकिनार करने में संकोच नहीं करता। इसका ज्वलंत उदाहरण यह है कि आज कल मनोरंजन के नाम पर परिवार के सदस्यों को एक–दूसरे के विरुद्ध विकृत व्यवहार करते और षड़यंत्र रचते दिखाया जा रहा है इसलिये आवश्यकता है कि मीडिया जगत विषय वस्तु का चयन समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को देखते हुये करें और सिर्फ व्यावासयिक व आर्थिक ध्येय न रखते हुये सामाजिक सरोकारो का भी ख्याल रखें।

अपने आशीर्वचन देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ (म. प्र.)के क्षेत्रीय निदेशक राजयोगी बी. के. महेन्द्र नें कहा कि मूल्यनिष्ठ मानव ही मूल्यनिष्ठ मीडिया का वाहक हो सकता है। वर्तमान समय परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा को मीडिया बनाकर मानवता के समग्र कल्याण का अद्भुत कार्य आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा बड़े ही गुप्त रीति से कर रहे हैं। परमात्मा के इस विश्वकल्याणकारी कर्तव्य में मानव मूल्यों का प्रचार प्रसार कर मीडिया मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

प्रधानमंत्री कार्यालय के पूर्व जनसंपर्क निदेशक अक्षय कुमार नें कहा कि आज समाज विभिन्न प्रकार के वैचारिक द्ववंद से घिरा हुआ है और वह कहां जाए वह निर्णय नहीं की पा रहा है। ऐसी स्थिति मे ब्रह्माकुमारी संस्थान जैसी नैतिक और आध्यात्मिक संस्था उसे सही दिशा दे सकती है। वर्तमान जटिल परिस्थितियों में मूल्यों के बीच सामंजस्य कठिन अवश्य है, परंतु अपनी दृढता और नैतिक बल से हम सफल हो सकते हैं। उक्त सम्मेलन में दो कार्यशालाएं हुईं। जिसमें श्री के. सी. मौली प्रोफेसर मा. च. रा. प. वि. वि., श्री विजय तिवारी, स्तंभ लेखक श्री सुनील शुक्ला, मुख्य संपादक, बी. टी. वी. न्यूज, भोपाल,

डॉ. विजय अग्रवाल, महानिदेशक, मीडिया एवं संचार, श्री शरद द्विवेदी, ब्यूरो प्रमुख, साम टी वी, श्री राजेन्द्र जोशी, निदेशक, राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, भोपाल आदि वरिष्ठ संपादकों एवं पत्रकारों नें अपने बहुमूल्य विचारों का आदान प्रदान किया।

सम्मेलन का समापन माखनलाल चतुर्वेदी रा. प. विश्वविद्यालय के कुलपति ए. एन. मिश्रा नें यह कहकर किया कि यदि पत्रकार निर्भीक होकर सत्य कहनें का साहस रखे और उसकी पत्रकारिता समाधानकारक हो तभी मीडिया का अस्तित्व औचित्यपूर्ण है। वरिष्ठ पत्रकार एल एस हरदेनिया नें अपने बेवाक वक्तव्य में कहा कि वर्नमान समय प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया बहुत से समृद्व हाथों में कैद होकर रह गया है जो मीडिया की मूल भावनाओं और उद्देश्यों का हनन तो कर ही रहें हैं और साथ ही उनके हाथें मीडियाकर्मियों का भी शोषण हो रहा है जो दुर्भागयपूर्ण है। इस दिशा में सकारात्मक पहल की आवश्यकता है। माखनलाज चतुर्वेदी रा. प. वि. वि. के प्रो. पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो कमल दीक्षित नें कहा कि आज का मीडिया भोगवाद और उनमुक्तता का पक्षधर बन गया है कुछ लोग तर्क दे सकते हैं कि ऐशोआराम से जिंदगी क्यों त जी जाए परंतु जिस भोगवाद को हम सुख का साधन मान रहे हैं कुछ ही समय में ब्यक्ति के लिए वह दुःख का कारण बन जाता है। अतः हमें भौतिक मूल्यों से परे अपनी अविनाशी और आध्यात्मिक मूल्यों दया, प्रेम, करूणा आदि को अपनाने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि ये सार्वभौमिक और सर्वकालिक हैं। और इन मूल्यों द्वारा ही सच्ची सुख और शांति की प्राप्ति हो सकती है। मूल्यों को अपनाकर ही मीडिया समाज को सही दिशा दे सकता है और अपनी महत्ता को सिद्ध कर सकता है। इस सत्र में प्रधानमंत्री कार्यालय के पूर्व जनसंपर्क निदेशक अक्षय कुमार ने भी अपने अनुभवयुक्त विचार व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज आबू पर्वत मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बी. के. शांतनु ने आभार प्रदर्शन किया।